विषय- संस्कृत, बी॰ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र डॉ॰ ओम प्रकाश आर्य
कादम्बरी - शुकनासोपदेश महाराजा कॉलेज, आरा
गद्यांश व्याख्या दिनांक - 15/08/2020

न परिचयं रक्षति । नाभिजनमीक्षते । न रूपमालोकयते । न कुलक्रममनुवर्तते । न शीलं पश्यति न वैदग्ध्यं गणयति । न श्रुतमाकर्णयति । न धर्ममनुरुध्यते । न त्यागमाद्रियते । न विशेषज्ञतां विचारयति । नाचारं पालयति । न सत्यमवबुध्यते । न लक्षणं प्रमाणीकरोति । गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति ।

Scanned with CamScanner

Date ___/___/_____ Page No.: _____

सान्वयार्थ- (न परिचयं रक्षति) यह न परिचय रखती है। (नाभिजनमीक्षते) न उत्तम कुल को देखती है। (न रूपम् आलोकयते) न सौन्दर्य को देखती है। (न कुलक्रमम् अनुवर्तते) न कुल परम्परा का अनुसरण करती है। (न शीलं पश्यति) न शील (चारित्र्य) को देखती है। (न वैदग्ध्यं गणयति) न चतुरता (वाग्विदग्धता) को गिनती है। (न श्रुतमाकर्णयति) न शास्त्र को सुनती है। (न धर्ममनुरुध्यते) न धर्म का अनुरोध करती है। (न त्यागमाद्रियते) न त्याग का आदर करती है। (न विशेषज्ञतां विचारयति) न विशेषज्ञता का विचार करती है। (न आचारं पालयति) न शिष्टाचार का पालन करती है। (न सत्यम् अवबुध्यते) न सत्य को जानती है। (न लक्षणं प्रमाणीकरोति) न शरीरस्थ लक्षणों को प्रमाण बनाती है। (गन्धर्वनगरलेखेव पश्यत एव नश्यति) गन्धर्वनगर की पंक्ति की भाँति यह देखते देखते ही अदृश्य हो जाती है।

टिप्पणी- यह अनार्या लक्ष्मी जान पहचान नहीं मानती, अतः बहुत समय तक किसी के पास में रहने पर भी क्षणभर में उसे अपरिचित की तरह त्यागकर चल देती है। यह सत्कुलों का परित्याग कर दुष्टकुलों का अवलम्बन लेती है। रूपवान् को छोड़कर

Scanned with CamScanner

कुरूपों का भी आलिङ्गन करती है। वंश-परम्परा से चली आती हुई भी व्यक्ति को त्यागकर चल देती है। सदाचार का पालन नहीं करती तथा दुश्चरित्रों का सहवास करती है। दक्ष व कुशल लोगों को छोड़कर जड़ लोगों के पास भी चली जाती है। पण्डित को छोड़कर मूर्ख का आश्रय ग्रहण करती है। धार्मिक को त्यागकर अधार्मिक से नाता जोड़ती है। दानी को छोड़कर कृपण का संरक्षण लेती है। सन्मार्ग पर चलनेवालों के पास नहीं फटकती। सत्य को समझती ही नहीं अतः प्रायः धूर्तों का आश्रय लेती है। दृष्टिभ्रम से कभी-कभी आकाश में एक नगर की सी प्रतीति होती है इस भ्रान्ति जन्य नगर को गन्धर्वनगर की संज्ञा दी गई है। ज्योतिष शास्त्र में इसे अमंगल और विनाश का प्रतीक माना गया है। जिस प्रकार गन्धर्वनगर अनर्थ की सूचना देता है और देखते ही देखते गायब हो जाता है, वैसे ही लक्ष्मी भी विनाश की द्योतिका है तथा देखते देखते ही विलीन हो जाती है। 'गन्धर्वनगरलेखेव' में उपमालंकार है। इस अनुच्छेद में लक्ष्मी में अनार्या नारी के व्यवहार का आरोप करने से 'समासोक्ति' अलंकार भी है।

पदव्याख्या - अभिजनम् - अभि + जन + घञ् वंश, ; कुलीनता। ईक्षते - ईक्ष् + लट्।
आलोकयते - आ + लोक् + लट्। कुलक्रमम् - कुलस्य क्रमः (ष० तत्पु०) तम्। अनुवर्तते - अनु + वृत् + लट्
वैदग्ध्यम् - विदग्ध + ष्यञ् = निपुणता, पटुता
गणयति - गण + लट्। आकर्णयति - आ + कर्ण् + लट्

Date __/__/____ Page No.: ______

अनुरुध्यते - अनु + रुध् + लट् । आद्रियते - आ + दृङ् + लट् । विचारयति - वि चर् + लट् अवबुध्यते - अव + बुध् + लट् । प्रमाणी करोति - प्रमाण + च्वि + करोति । गन्धर्वनगर-लेखा - गन्धर्वाणां नगरं (ष० तत्पु०) तस्य लेखा (ष० तत्पु०) । नश्यति - नश् + लट् प्र० पु० ए० । इति ।